

॥ श्री गणेशाय नमः श्री कृष्णाय नमः ॥ मालवीतविश्वभासु ॥ नवत उदैलाचेंडाम् ॥ ७
दुयाडिनीविक्रामु ॥ वेदुआता ॥ १ ॥ जोअवियेरातिरसोनिया ॥ गिळीज्ञानाज्ञानचोंदिणिया
जोसुदिनुकरिज्ञानिया ॥ स्वबोधाचा ॥ २ ॥ जेणेविवळतियेसवेळ ॥ लाहूनिआत्मज्ञानाचेंडोबे ॥
सांडितिदेहाहंतेचेअविसाळ ॥ जीवपक्षी ॥ ३ ॥ लिंगेदलकमळाचा ॥ पोटेवचतयाचिद्रुम
राचा ॥ बंदीमोक्षजयाचा ॥ उदैलाहोये ॥ ४ ॥ शब्दाचियाआशकडि ॥ भेदनदीचादोहितुडी
आरडातेविरहवेडि ॥ बुद्धिबोधु ॥ ५ ॥ तयाचक्रवाकाचेमिथुन ॥ सामरस्याचेसमाधान ॥
भोगवीजोचिद्रुगन ॥ भुवनदिवा ॥ ६ ॥ जेणेपाहलियेपाहोरे ॥ भेदाचिचोरवेळफिरे ॥ रिग
तीआत्मानुभववोट ॥ पांथिकयोगि ॥ ७ ॥ ज्याचेनिविवेककिरणसेगे ॥ उन्मेखसूर्यकांतकुणगे ॥
दिपलेजाळितिदोंगे ॥ संसाराचि ॥ ८ ॥ जयाचाररमीपुंडुनिबस ॥ होतास्वरूपउखरिस्त्रि ॥
येमहासिद्धिचापुरु ॥ मृगजळते ॥ ९ ॥ जोप्रत्युगोधाचयामाथया ॥ साहंतेचामाध्यानिआ

लया ॥ तपे आत्मभ्रांतिव्याया ॥ आपणपांतकि ॥ १० ॥ ते का विश्व स्वप्न सहिते ॥ कोण अन्य
 धामती निद्रते ॥ सांभाळि नुरचि जेथे ॥ मायाराति ॥ ११ ॥ अणो निअद्यु बोध पाठणी ॥ तथ म हा
 नंदाचिया दारणी ॥ मग सुखानुभूतिचि ही घेणी देणि ॥ मंदोवालाग लि ॥ १२ ॥ किं बहु हे से से मु
 ले केवल सुदि वेस ॥ सदा का हिजे का प्रकारे ॥ जयोचे नि ॥ १३ ॥ जो निज धाम व्योमी चारो बो ॥
 उदैला का चि उदै जत खेवो ॥ फेडि पूर्वी दि दिशा योवो ॥ उदो अस्त चो ॥ १४ ॥ नदि सणे दि सणे न सि
 मावळो वि ॥ दो हि सा किले ते सेंघ पाळो वि ॥ का इ बहु बोळो ते आघो वि ॥ उखा चि आणि ॥ १५ ॥ तो अ
 होरात्राचा पैल कडु ॥ कोणे देखवा ज्ञान मार्तंडु ॥ जो प्रकारे वीण सुरवाडु ॥ प्रकाशा चा ॥ १६ ॥ त
 याचि सूर्या श्री निरति ॥ आतान मोक्षणे पु उत पु उति ॥ जेवा धका यइ जेति स्तुति ॥ बोलाचिया ॥ १७ ॥
 देवाचे महिमान पाहो निया ॥ स्तुती तरि यइ जे चा गावया ॥ जरि स्त व्य बुद्धि सी लया ॥ जाई जे का ॥ १८ ॥
 जो सर्व ने णि वा जाणिजे ॥ मोनाचिया मिटिया वनिजे ॥ काहि चि न हूनि आणिजे ॥ आपण पया जो ॥ १९ ॥

तया तु सिया उदे रासादि ॥ पश्यति मध्यमा पोदि ॥ सन्निपर चिया हि पाटी ॥ वैखरी विरे ॥ २० ॥ तया तु ते मी
सेवकपणे ॥ देव विबो लिके यास्तो वाचे लेणे ॥ हे उपसा होव हि ल्पणता उणे ॥ अद्ययाने ॥ २१ ॥ परिरे के अ
मृताचा सागर ॥ देखिलिया उचिताचा पे उ विसर ॥ मग धावे करू पाहुणे स ॥ राकाचा तया ॥ २२ ॥ ते थ
रा कुहिकी रू बहु तलणावा ॥ तयाचा हर्ष वे गुचि घेयावा ॥ उजलु नि दिव्य ते ज हाति वा ॥ ते भक्ति
चि पाद्मा वि ॥ २३ ॥ बाळा उचित जाणणे होये ॥ तरि बाळपण चिके आहे ॥ परि साच चिये री माया ॥ सु
णो नितो वे ॥ २४ ॥ हा गा गा वर सया भरले ॥ पाणि पाटी पा घेद त आले ॥ ते गंगा का इ ल्पणिते ॥ परते
सर ॥ २५ ॥ जी भू गुचा कै सा अपकास ॥ कितो मानूनि प्रिय उपचास ॥ तो वे चि ना सांर ग ध स ॥ गुस्वा
सि ॥ २६ ॥ कि अधोर नख ते ले अंबर ॥ जालया दिवस नाथा समोर ॥ तेणे ते पहासर ॥ ल्पणिते का शि ॥ २७ ॥
ते वि भद बुद्धि चये तुले ॥ चालु नि सूर्य श्लेशाचे कां योळे ॥ तु कित्ता सिते एके वेळे ॥ उपसा हि जो जी ॥ २८ ॥
जि हि ध्यानाचा डोळा पा हि ल्पिता सि ॥ वेद वाचा नानि ल्पिता सि ॥ जे पु पसा हिले तया सी ॥ ते आ ह्या हि करी ॥ २९ ॥

२

परिमीआजितुसागुणी ॥ वाचावलाअपराधुहिनगणी ॥ अलेतेकरीपरिअर्धधणी ॥ तुमेकरा ॥ ३१ ॥
 म्यागीतायेणेनावे ॥ तुझेपसायामृतसुहावे ॥ वानुलाघळतेदुणेनथावे ॥ देवलेदेव ॥ ३२ ॥ मासिसयवा
 दाचेतप ॥ वाचोकेलेबहुतकल्प ॥ तथाफळाचेहेमहाधिप ॥ पातलिप्रभु ॥ ३३ ॥ पुण्येफेसीलीअसा
 धारेणे ॥ तियेतुझेगुणवाणणे ॥ देउनिमजउत्तीर्णे ॥ जालिआजी ॥ ३४ ॥ जीवलाचाआउविआ
 तुडलेहोतोमरणागवी ॥ तेअवदसाचिआघवि ॥ फेडिलिआजी ॥ ३५ ॥ जेगीतायेणेनावेना
 वाणिगी ॥ जेअविद्याजिणेनिदादुगी ॥ तेकीर्तितुसीआलाजोगी ॥ वानावयाजालि ॥ ३६ ॥ पैनि
 र्धनाघरिवानवसे ॥ महालक्ष्मीचियेउनिबैसे ॥ तथातेनिर्धनअैसे ॥ खणोयकाई ॥ ३७ ॥ काअं
 धकाराचयायया ॥ देवेसूर्यआळया ॥ तोआंधारचिजगया ॥ प्रकासुनके ॥ ३८ ॥ ज्यादेवाचिपा
 हाताधोरी ॥ विष्णुपरिमाणुहिदृगानधरि ॥ तोमावाचियासरोभरी ॥ नकेचिकाई ॥ ३९ ॥ तैसामीगी
 तावाखाणि ॥ ह्रस्वपुष्पाचितुरंबणि ॥ परिसमर्थतुवासिरियाणि ॥ फेडिलीते ॥ ४० ॥ खणोनितुसेनिप्र

या

२

सादे श्रीगीतापद्यअगाधे ॥ निरूपीन जीविषदे ॥ ज्ञानदेवोत्सणे ॥ १० ॥ तरिअध्याईपेधरावा ॥ श्रीरूप
तयापांडवा ॥ शास्त्रसिद्धांतआघवा ॥ उगाणिला ॥ ११ ॥ जेदक्षरपकपरिभाषा ॥ केलेउपाधिरूपअशे
या ॥ सदैयेजैसदोषा ॥ अंगलिना ॥ १२ ॥ आणिकुटस्थुजोअक्षर ॥ दाविलापुस्वप्रकार ॥ तेणउप
हिताहिआकार ॥ चैतन्याकेला ॥ १३ ॥ पायीउत्तमपुस्व ॥ शब्दाचेहिकरनिमित्त ॥ दाविलेचोख ॥ आस
तख ॥ १४ ॥ आत्मविश्रुआतुवर ॥ साधनजेअगदर ॥ ज्ञानहेहिस्पष्ट ॥ चावळता ॥ १५ ॥ सुणा नि
यियेआध्याई ॥ निरूप्यतुरचिकाहि ॥ आतागुरुसिद्धादोहि ॥ स्नेहोलाहाणा ॥ १६ ॥ एवंपेविषईकिर ॥
जाणतेबुझावळेअपार ॥ परिमुमुक्षुतर ॥ साकांक्षजाळे ॥ १७ ॥ यामजजोपुस्वोत्तमा ॥ ज्ञानभे
टेजोसुवर्मा ॥ तोसर्वज्ञतोचिसिमा ॥ भक्तिचिही ॥ १८ ॥ हेसैहेत्रैलोक्यनायके ॥ बोलिलेअध्यायां
तश्लोके ॥ तेथेज्ञानचिबहुतेके ॥ ज्ञानिलेतोये ॥ १९ ॥ भस्निप्रपंचाचाघोटु ॥ किजेदेखतयाचिदे
खतादृष्टु ॥ अनंदसाम्राज्यीपाटु ॥ बांधिलेजिवा ॥ २० ॥ यवठियालाटेपणाचाउपावो ॥ आनुनाहि

३

चि (प्रणेदेवो ॥ हासम्यकू शाना चारोवो ॥ उपायामाजी ॥ ५१ ॥ ऐसे आस जि हास जे होते ॥ तिहितो यत्नेनि
 चित्ते ॥ आदेर तथा शानोते ॥ वोवाविले जिवे ॥ ५२ ॥ आता अवडिजे थपडे ॥ तथा ची अवसरि पुढे पुढे ॥
 रिगो लोहे हे घेउ ॥ प्रमथेसे ॥ ५३ ॥ त्रणे नि जि हासुचापेकी ॥ शानो प्रतिती होय ना जवनि वि ॥ तवयो
 गक्षम शान विधि ॥ स्फुरे लचि वि ॥ ५४ ॥ त्रणे नि तेचि सम्यकू शान ॥ कैसे नि होय स्वाधि न ॥ जालया
 वदियुन ॥ घेउ के वि ॥ ५५ ॥ का उप जो चि जे न लोहे ॥ जे उप जे ले हि आ का ठा सुय ॥ ते ज्ञानि विरुद्व
 का इ आ हे हे जाणवे कि ॥ ५६ ॥ मग जाण तथा जे विरु ॥ तथा ची वाट वा हाति कस ॥ शाना हित तेचि
 विचार ॥ सर्व भोवे ॥ ५७ ॥ असा जि हास तु ह्री समस्ती ॥ भाव जो धरि लोस चिति ॥ तो तो पुरा वया
 लक्ष्मीपति ॥ बो लि जै ल ॥ ५८ ॥ शाना सि सुजन्म जो ड ॥ आपु लि विद्या ति हि वरि वो ॥ ते संप ती
 चे पवो ड ॥ सांघि जे दे वी ॥ ५९ ॥ आणि शाना चे नि कामा कोर ॥ जे राग दे या सि दे थारे ॥ ति ये आसुरि
 ये हि घोरे ॥ करि ल रूप ॥ ६० ॥ सहजे शक्या नि कृ करणि ॥ दो घी चि रया कवतु किणि ॥ हुनवमा ध्या इउ

अ

३

भारणि ॥ के ली हो ती ॥ ६१ ॥ ते थसा उमाघे या वा उवावो ॥ तव वो उवला आनु प्रस्थावो ॥ तरे तथा प्रसंगे
आतो देवो ॥ निरूपित से ॥ ६२ ॥ परि हे असो प्रै आता प्र स्के ति ॥ क्षाना चाहि ताहि ती ॥ समर्थो संपती
याचि दो ॥ ६३ ॥ तया निरूपण चे नि नावे ॥ अध्याय पद सो काव ॥ कावणी पा हा ता जाणो व ॥ मा
गिता वारि ॥ ६४ ॥ जे मु मुख मार्गी चि वो ला वि ॥ जे मो हरा चि चि धर्म दि वी ॥ ते आधी तव दे वी ॥ संपति आ
इका ॥ ६५ ॥ जे थर कु र का ते पो धि ॥ ते से बहु त प दार्थ र कि ॥ संपा दी ज ति ते लो की ॥ संप ती ह्य नि जे ॥ ६६ ॥
ते दे वी सुख संभ वी ॥ ये थै दे वा गुणा र को प जि वी ॥ जालि ह्य णो नि दे वी ॥ संप ती हे ॥ ६७ ॥ श्री
भगवानुवाच ॥ अभयं सत्संशुद्धिर्त्तानयोगव्यवस्थितिः ॥ दानंश्च यज्ञश्च स्वाध्याय
स्नप आर्जवं ॥ १ ॥ श्रीका ॥ आता तथा चि दे व गु णा ॥ मा जि धुरे चा वै स णा ॥ वै से तथा आ क र्णा ॥
अभय ते से ॥ ६८ ॥ तरे न घ लु नि म हा पु री ॥ न घे पे बु उ ण या चि सि यारि ॥ का रो गु न ग णि जे घ रि ॥ प थ्या
चि या ॥ ६९ ॥ ते सा क र्मा क र्मा चि या मो ह रा ॥ उ टुं ने दु नि अ हं का रा ॥ सं सा रा चा द रा रा ॥ सो उ पे ये णे ॥ ७० ॥

अथवा अक्य भावनेचे निपैसे ॥ दुजे मानुनि आसा असा ॥ शयवार्तादेश ॥ दवउणेजे ॥ ७१ ॥ पाणी बुड
 उये मिराते ॥ तवमिठ चिपाणी आते ॥ तेवि आपण जाले निअद्वैते ॥ नाशभय ॥ ७२ ॥ अगाअभयये
 णेनावे ॥ वलिजेते हेजा णावे ॥ सम्यक् ज्ञानाचे आघवे ॥ धावणेहे ॥ ७३ ॥ आतासत्सुद्धिजे स्रणिजे
 ते असाचि निजाणिजे ॥ तरिजेके नाविसे ॥ रांखे डीजेसी ॥ ७४ ॥ कापाडिवांवाठि नमगे ॥ अवसे
 तुटिसांडुनि मागे ॥ माजिअतिसूक्ष्मअंगे ॥ चंद्रजै साराहे ॥ ७५ ॥ नातरिवरिखा सांडिती ॥ ग्रीस्ये
 नाहिमांडिती ॥ माजिनिजरूपेनिवडलि ॥ गंगाजै सी ॥ ७६ ॥ तैसीसंक्रमविकल्पाचिवोळी ॥
 सांडुनिरजतमाचिकावडी ॥ अंगितानिजधर्माचिआवडि ॥ बुद्धिउरे ॥ ७७ ॥ इंद्रियेवर्गेदाखविल
 या ॥ विस्झाअथवाभलिया ॥ विस्माकाहिकेलया ॥ नुठीचित्ति ॥ ७८ ॥ गावागेलियावल्लभु ॥ पतिव्र
 तेचाविरहक्षोभु ॥ भलतेसणिहाणिकाभु ॥ नमनीजेवि ॥ ७९ ॥ तेविसस्वरूपरुचतेपणे ॥ बुद्धिजे
 असेअनन्यहोणे ॥ तसत्सुद्धिस्रणे ॥ केशिहंता ॥ ८० ॥ आताआत्मत्वाभाविंसी ॥ ज्ञानयोगमा

जि एकि ॥ जे आपु लिये राकि ॥ होवे भरे ॥ ८० ॥ ते थसग किये चित वृत्ति ॥ त्याग करणे यारि ति ॥ निष्का
मे पूर्णा रुति ॥ रुतां शि जै सि ॥ ८१ ॥ कां सकु लिये आपु ति ॥ आत्मज्ञा कु बिचि दि धलि ॥ हे असो तक्ष्मी
स्थिरावली ॥ मुकुं दी जै री ॥ ८२ ॥ तै से नि विकले पणे ॥ जे योगज्ञानी चया वृत्ति भ्रूलोणे ॥ तो ति जा गुण
णे ॥ श्री कृष्ण नाथु ॥ ८३ ॥ आता देहे वाचा चित्ते ॥ यथासंपन्ने विन्ते ॥ वैरि जातिया हि आर्ता ते ॥ नवं
चपे का ॥ ८४ ॥ पत्र पुष्प फलाया ॥ फळ मुळ धनं जया ॥ कोट चान चुके आत्मया ॥ वृक्षु जै सा ॥ ८५ ॥ तै सा
मनौ नि धन धान्य वीरे ॥ विद्य माने अत्मा अवसरि ॥ आता चिये मनो हारी ॥ उपे गा जाणे ॥ ८६ ॥ त
याना वजाण दान ॥ जे माक्ष नि धाना च अंजं न ॥ हे असो आइ का चिन्ह ॥ दम चिते ॥ ८७ ॥ तरि विष
यें द्रिय मिळणी ॥ कसु निघोपे विनुरणी ॥ जै से तो डिजे खडुळ पाणि ॥ पारक्या ॥ ८८ ॥ तै सा विषय जा
ता चा वारा ॥ वाजो ने दिजे इंद्रिय दारा ॥ ये वाधो नि प्रत्याहारा ॥ हा ति बोपी ॥ ८९ ॥ आंतु ला चित्ता
चे आंग वरि ॥ सांडु नि प्रवृत्ति पळे पर बाहिरि ॥ आ गी सु हजे दो हे ही दारी ॥ वैराग्या चि ॥ ९० ॥

स्वासास्वासाहूनि बहुवेसा ॥ अचरति व्रतस्वरपुसे ॥ वो संतितारात्रिदिवसे ॥ नाराणूकजया ॥ १२ ॥
 पैशुमेसे त्रणिपे ॥ तोहाजाणस्वरुपे ॥ यागार्थहि संक्षेपे ॥ सांगे आशक ॥ १३ ॥ तरि ब्राह्मणु करु
 निधुरे ॥ स्त्रिया दी कपेलिमैरे ॥ मासारी अधिकारे ॥ आपुला लेनि ॥ १४ ॥ जयाजे सर्वोत्तम ॥ भजनी
 येदेवता धर्म ॥ तेतेणे यथागम ॥ विधीयजिजे ॥ १५ ॥ जैसा द्विजु बटू कर्म करि ॥ सूत्रतया ते नमस्कारि ॥
 किंदो ही सिहि सरो भरी ॥ निफुजयागु ॥ १६ ॥ तैसे अधिकार परि आलाचे ॥ हे यज्ञ करणे सर्वांचे ॥
 परिविषय विषकाशचे ॥ नघालावे माजी ॥ १७ ॥ आणि मी कर्तारे साभावो ॥ नेदिजे देहाचे निदोर
 जावो ॥ नोवेदाज्ञे तरि गोवो ॥ होयिजे स्वये ॥ १८ ॥ अर्जुनाएवं यज्ञु ॥ सर्वत्र जाण साहु ॥ कैवल्यमार्ग
 याअभीष्टु ॥ सांगती हा ॥ १९ ॥ आताचे दुवे गोयि हाणिजे ॥ हे नके तो हाता आणिजे ॥ किसेति वी
 परिजे ॥ परिपिकीलक्ष ॥ २० ॥ नातरिरे विलेखा वया ॥ आदरु किजे दिविया ॥ काराखाफुड्या वया ॥
 सिंपिजे मूळ ॥ हे बहु असो आरिसा ॥ आपणपेदेखा वया जैसा ॥ पुडति पुडति बहुवसा ॥ उदिजे प्रिलि ॥ २१ ॥

तैसावदप्रतिपाद्यजोश्चरु ॥ तो होवयातागीगोचरु ॥ श्रुतिचानिरतरु ॥ अभ्यासुकरणे ॥ ३ ॥ तेविद्धि
हासीचिब्रह्मसूत्र ॥ यरास्तोत्रकानाममात्र ॥ आवर्तवणेपवित्र ॥ पावावयातत ॥ ४ ॥ पार्थीणस्वाध्यायो
बोळिजेतोहाखणेदेवो ॥ तपशब्दाभिप्रायो ॥ आशकेसांगो ॥ ५ ॥ तरिदोनसर्वस्वदणे ॥ वचनेतव्य
र्थकरणे ॥ जैसेकोनिस्वयसुवेणे ॥ इद्रावणिजेवि ॥ ६ ॥ नानाधूपाचाअग्नीप्रवसु ॥ कनकीतुका
चानसु ॥ कापितृपक्षपोषिताहरामु ॥ चंद्राचाजैसा ॥ ७ ॥ तैसास्वरूपाधियाप्रसरा ॥ कागिप्राणेंद्रि
याशरीरा ॥ आटणीकरणेजेविरा ॥ तेचितप ॥ ८ ॥ अथवाअनारिसे ॥ तपाचेरूपजरिअसे ॥ जाणपा
जेविदुंधीहंसे ॥ सुदहीचाचु ॥ ९ ॥ तैसेदहजिगचियेमिळणि ॥ जोउदेंजतसुयेपाणि ॥ तोविवेकअं
तः करणी ॥ जागविजो ॥ १० ॥ पाहाताआत्मयाकडे ॥ परिवुद्धिचापैसुसाकडे ॥ सनिद्रस्वनवु
डे ॥ जागणेजैसे ॥ ११ ॥ तैसाआत्मपरिआगेचु ॥ प्रवर्तेजोसाचु ॥ हातपाचानिर्वेचु ॥ धनुर्धरा ॥ १२ ॥
आतावाकाचोतीस्तन्य ॥ जैसेनानाभुतीचैतन्य ॥ तैसप्राणिमात्रीसौजन्य ॥ आर्जवते ॥ १३ ॥

६

॥ श्लोक ॥ अहिंसासत्यमक्रोधस्व्यागः शांतिरपैशुनं ॥ दयाभूतव्यत्नोदुतं मार्दवं हीरवा
 पवं ॥ २ ॥ **रिका** ॥ आणि जगचिया सुखो देखो ॥ शरीरवाचा मानसे ॥ राहाटणे ते अहिसो रूप
 जाण ॥ १ ॥ आता तिखहो उनि मनाळ ॥ जैसे जातीचे मुकुळ ॥ काते जपरिशीतळ ॥ राशां काचे ॥ ५ ॥
 शेकेदाविताचि रोगफेडु ॥ आणि जिभेतरिनके कुडु ॥ तेवो खदनाहि माघडु ॥ उ पमाकैचि ॥ ६ ॥ तही
 मोपणे बुबुळे ॥ अगडिताहि परिनाडे ॥ येरुवी फोडिकोराके ॥ पाणि जैसे ॥ ७ ॥ तैसे तोडावयासं
 देह ॥ तिखजैसे कालोह ॥ आवावे तरि माधुर्य ॥ पाइ घाळि ॥ ८ ॥ आइकोराताकवतिके ॥ कानाते
 चिनिगतीमुखे ॥ जेसाचारिवेचे निबिके ॥ ब्रह्महि भेदि ॥ ९ ॥ किंबहुनाप्रियपणे ॥ कोफ्हातेहिस
 कुउनेणे ॥ यथार्थतहीखुपणे ॥ नाहिकोफ्हा ॥ १० ॥ येरुवी गोरिकिर कानागे ॥ ३ ॥ परि साचाचा
 पाखाबिदि ॥ आगीचे करणे उघड ॥ परि जेकोते साच ॥ ११ ॥ कानी लागता महुर ॥ अर्थे विभांडी
 जिकार ॥ तेवाचानके सुंदर ॥ लावंचि पा ॥ १२ ॥ परि अहिती कोपो निसोप ॥ द्याळनी मउ जैसेपु

६

व्य॥ तिये मातेचे स्वरूप॥ जैसे होये॥ २३॥ तैसे प्रवण सुखचतुर॥ परिण मो निसाचार॥ बोलणेजे
 अविकार॥ ते सत्येथे॥ २४॥ आता घालिताहि पाणि॥ जैसे पाषाणीन नीचे आणि॥ कामथिलया
 हिलोणि॥ कांजीनेदी॥ २५॥ खचापायेचिरी॥ हालयाहि फुडन करि॥ वसेतेहि अंबरि॥ नहोतीपुण्या॥ २६॥
 जानारंभेचेनहिरुपे॥ सुविनुगीजेचिकंदर्पे॥ काभस्मीवज्जीनारोपे॥ घृतेहिजेवी॥ २७॥ तेविबु
 मारुक्रोधभरे॥ तैसियामंत्राचेविजाक्षर॥ तेनिमोत्तेहिअपोर॥ मीनलया॥ २८॥ परिधात्रेयाहि
 पायापडता॥ नुटीतायुपांडुसुता॥ तैसिनुपजेउपजविता॥ क्रोधोर्मागा॥ २९॥ अक्रोधखट्खट्ना
 वतेयेद्वे॥ जाणस्मीनिवासे॥ सुणीतलेतया॥ ३०॥ आतामृत्तिकायागेघटु॥ तंतुयागेपटु॥ सु
 जीजेविबु॥ बीजयागे॥ ३१॥ कांसुजनिर्भंतिमात्र॥ युजिचेअवघेचिचित्र॥ कानिद्रयागेवि
 चित्र॥ स्वप्रजा॥ ३२॥ नानाजळयागेतरंग॥ वर्षीयागेमेघ॥ युजिजतिजेविभोग॥ धनयागे॥ ३३॥
 तेविबुद्धिमंतिदेहि॥ अहेतासांडूनिपाहि॥ सांडिजेअसेखहि॥ सेसारजात॥ ३४॥ तयानाव

७

या

३

सागु ॥ अनेतोयशांसु ॥ हेमानुनिसुभगु ॥ पार्थपुसे ॥ ३५ ॥ आताशांतिचेजीलिंग ॥ व्यक्तमजसा
 ग ॥ हेकोखणतीचांग ॥ अवधानदेश ॥ ३६ ॥ तरिगिदुनीज्ञयाते ॥ आताज्ञानहिमाघोते ॥ हारपेनि
 स्ते ॥ तिशोतिपैंग ॥ ३७ ॥ जैसाप्रकंबुंचाउभडु ॥ बुडुनिविम्वाचापवाडु ॥ होयआपणपेनिबी
 डु ॥ आपणपाचि ॥ ३८ ॥ मगउर्गविघसिंधु ॥ हानुरव्यवहारभेदु ॥ परिजबहेक्याचाबोधु ॥ तोहि
 कवणा ॥ ३९ ॥ तैसीज्ञेयोदतामिटी ॥ आत्रुत्वहिपडेपोति ॥ मगउरतेचिद्विरीटी ॥ शांतिचेरूप ॥ ४० ॥
 आताकदर्थवितव्याधी ॥ बळिकर्णाचियाआधी ॥ आपपरनेशोधी ॥ सदैद्यजैसा ॥ ४१ ॥ का
 चिखलिरततिगाये ॥ धडभाकडनपाहे ॥ जोतियेचियाग्लानिहोये ॥ काळाबुलि ॥ ४२ ॥ नाना
 बुडतयातेसकरुणु ॥ नपुसेअंसुकाब्राह्मणु ॥ काडुनिसाखेप्राणु ॥ हेचिजाणे ॥ ४३ ॥ किमहा
 वनीपापिये ॥ उघडिकेकीविपाये ॥ तेनेसविळ्माकीणपाहे ॥ सीसुजैसा ॥ ४४ ॥ तैसेअज्ञान
 प्रमदादिवि ॥ काशाक्तनहिनसदोखी ॥ निच्युत्वाचासर्वविधि ॥ खिळितेजे ॥ ४५ ॥ तथाआंगी

७

कृष्णपुत्रे ॥ ३ ॥ नियाभले विसरविजतिसले ॥ सल तीतिये ॥ ४६ ॥ आगपुठिताचादोषु ॥ कुरुनि ॥ ७ ॥ अपु
लियादिशेचोसु ॥ मगघोपेअवला ॥ कु तयावरि ॥ ४७ ॥ जै सापुजा निदेको पाहिजे ॥ परनिसेताजायि
जे ॥ तोसौनि प्रसादघेइजे ॥ अतीथीचा ॥ ४८ ॥ तैसेअपुलेनियुणे ॥ पुठिताचेउणे ॥ फेडुनिया पाहा
णे ॥ तयाकडे ॥ ४९ ॥ वाचुनिनविधीजेवर्मा ॥ ननातु उविजेअकर्मा ॥ बोलाविजेनामी ॥ सदाविति
हि ॥ ५० ॥ वरिकेक्येके उपाये ॥ पडिलेते उभेहोये ॥ तेचिकिजेपरिचाये ॥ नेदावेवर्मा ॥ ५१ ॥
पैउत्तमाचिया सादि ॥ निचमानिजोकिरी ति हेवाचूनिदिदि ॥ दोसुनघेपे ॥ ५२ ॥ अपैसुन्याचेत्त
क्षण ॥ अर्जुनाहफुडजाण ॥ मोक्षमार्गचेसुखासन ॥ मुमुक्षुहे ॥ ५३ ॥ आतादयातेअसी पूर्ण ॥
चंद्रिकाजैसी ॥ निववितानकडसी ॥ सानेथो ॥ ५४ ॥ तैसेदुःखिताचेशिणणे ॥ हिरतासकर्णप य
णे ॥ उत्तमअधमनेणे ॥ विवंचगा ॥ ५५ ॥ पैजगीजीवनासारिखे ॥ वस्तुआंगवरीउपखे ॥ परैजि जाते
वितराखे ॥ लूणाचेहि ॥ ५६ ॥ तैसेपुठिताचेनितापे ॥ कळवकिलियेदोषे ॥ सर्वस्वैसीदिधले आप

णपे ॥ त हीयो डेचिगमे ॥ ५७ ॥ निम्नभरलयाउणे ॥ पाणिठेकोचिनेणे ॥ तेविश्रात तोवोनिजाणे
 सामोरया ॥ ५८ ॥ पैपायिकायानेहरे ॥ तवव्यथाजिवीउमेट ॥ तैसापोडेसंकेटा ॥ पुठीलाचेनि ॥ ५९ ॥ कापा
 कोसीतळताळोह ॥ कित्तोडोवयाचिलगीहोये ॥ तैसापरसुखेजाय ॥ सुखावतु ॥ ६० ॥ किं बहुनात्विता
 त्वागी ॥ पाणि आसइलेअसेजगी ॥ तैसेदुखीताचासलभागी ॥ जिणेजयाचे ॥ ६१ ॥ तोपुरुषुवी
 रराया ॥ मूर्तिमेंतजाणदया ॥ मीउदैजताचितया ॥ रिणियालागे ॥ ६२ ॥ आतासूर्यासिजीवे ॥ अनु
 सरलियासजिवे ॥ परितेतोनसिवे ॥ सौरभ्यजैसे ॥ ६३ ॥ कावंसंताचियावाहाणि ॥ ६४ ॥ आलियावन्यमि
 येच्याअक्षोहिणी ॥ तेनकरितुचिघेणी ॥ निगाळातो ॥ ६५ ॥ हेअसोमहासिद्धिसि ॥ लक्ष्मीहिआ
 ल्मापासि ॥ परिमहाविष्णुजैसे ॥ गणीचिनाते ॥ ६६ ॥ तैसेअहिद्विचेस्वर्गचे ॥ भोगपाइकजाळि
 याइछेचे ॥ तहीभोगवेहेनरुचे ॥ मनामाजी ॥ ६७ ॥ बहुकायकवतिमि ॥ जिउनकेविषयअभि ॥
 वारी ॥ अलौलुवदशायाउकी ॥ जाणतेहे ॥ ६८ ॥ आतामासियाजैसेकामोहळ ॥ जळचरिजेवि

वहिसाहातिया गरिमा ॥ गर्वीनेयेतेचिक्षमा ॥ जैसेदेहवाहू निरामा ॥ वाहणेनेणे ॥ १८० ॥ आ
णिमातळयाइंद्रियाचेवेग ॥ काप्राचीनेखवळतेरोग ॥ अथवायोगवियोग ॥ प्रियाअप्रियाचे ॥ १८१ ॥
या ॥ अवधिषीचिथोर ॥ येकेवेळेआळियापुस ॥ तरिअगस्तीकाहोउनिधिस ॥ उभागके ॥ १८२ ॥
आकाशिधुवाचिरखा ॥ उटिलिबहुवाआगळिका ॥ तेगिळियेकिसुळका ॥ वाराजेवि ॥ १८३ ॥
तैसेअधिभूताधीदेवा ॥ आध्यात्मादिउपद्रवा ॥ पातळयापांडवा ॥ गुरुनिघाळि ॥ १८४ ॥ आ
ताइश्वरप्राप्तिकागी ॥ प्रवर्तताज्ञानयोगी ॥ धिवसयाचिआंगी ॥ उणीवनेके ॥ १८५ ॥ जैसेचि
तक्षोभाचाअवसरी ॥ उचळुनिधेयीजेचांगोवेकरि ॥ धृतिद्वणिपेअवधारी ॥ तयातेगा ॥ १८६ ॥
आतानिर्वाळुनिकनेके ॥ अरिदोगेगोयपियुषे ॥ तयाभक्तसाचयासारिखे ॥ शौचअसे ॥ १८७ ॥ जेअं
गिनिःकामआचार ॥ जिविविवेकसाचार ॥ तोसवाह्यघडकाआकास ॥ शुचिताचा ॥ १८८ ॥ कोफेडीत
पापताप ॥ पोषिततिरीचेपादप ॥ समुद्राजायआप ॥ गंगेचेजैसे ॥ १८९ ॥ कौजगाचेआंध्रफेडिवु

१०

प्रियेचिराउकेउघडितु निगेजेसाभास्वतु प्रदक्षणे ॥२००॥ तैसिबंधलिसोडिता बुडालिकाठि
 ता साकडिफेडिता आतीचिया ॥१॥ किं बहुनादिवोरति पुठि लोचसुखउन्नति ॥ आणितआ
 णितास्वार्थि प्रवशिजे ॥२॥ वांचूनिआपुतया काजातागी प्राणिजाताचा अहितभागी ॥ संक
 ल्माचिहि आउवंगी ॥ न करेणजे ॥३॥ पैअद्रोस्व अंसियागोळी ॥ आयिकसिजयाकिरीठि ॥
 तेसांगी तलेहदिरी पाहोयेतैसी ॥४॥ आणिंगगरां भूचामाथा पावोनि संकोचे जेविपाथी ॥
 तेविमान्यपण सर्वथा ॥ लाजणजे ॥५॥ तैहपुडति पुडति ॥ अमानीत्व जाण सुमति ॥ मागासांगी
 तलेसकिति ॥ तेचितेबाले ॥६॥ रुवंयिहिसविसे ॥ ब्रह्म संपदाहवसतसे ॥ मोक्षचक्रवर्त्तिचे
 जैसे ॥ अग्रहारहोये ॥७॥ नानोहसंपती देवी ॥ यागुणती थीचिनिचनवि ॥ निर्विण्ण सगराचा
 देवी ॥ गंगाचिआलि ॥८॥ किगुणकुसुमाचिमाका ॥ हेघेउनिमुक्तिबाग ॥ वैराग्यनिरपेक्षाचागका
 जीवसीतसे ॥९॥ किं सविसे गुणज्योति ॥ इहिउजडुनिहे आरति ॥ गीताआत्मयानिजपति ॥ निराजना
 आलि ॥२१॥

१०

उगदिति निर्मिदि ॥ गुणयेचिमु काफे ॥ देवीसुक्तीकेवे ॥ गीतार्णवीचि ॥ ११ ॥ कायि बहुवानुअैसि ॥
अभिव्यकीयेअपैसी ॥ देवीगुणससी ॥ संपतीरुप ॥ १२ ॥ आतादुःखाचिआतुवटवेलि ॥ दोबका
टयाचिजहीभरलि ॥ तहीनिजावधानीघालि ॥ आसुरीत ॥ १३ ॥ पैत्याज्यस्यजावयात्तगी ॥ जा
णाविजहीअनुपेगी ॥ आइकातेचांगी ॥ श्रोतरालि ॥ १४ ॥ तरिनरकवेथाथोरी ॥ आणावयादो
विअघोरी ॥ मनुकेलातेआसुरी ॥ संपतिहे ॥ १५ ॥ नानविषवर्गुयेकवटु ॥ तयानावजैसावासु ॥
असुरसंपतीहाखोटु ॥ दावाचातैसा ॥ १६ ॥ स्तोक ॥ इंभादपीप्पिमानस्वक्रोधःपास्वमेवच ॥
अज्ञानेचाभिजातस्यपार्थसंपदमासुरी ॥ १७ ॥ रिका ॥ तरितयाचिअसुरा ॥ दावामाजिजयाविरा
वाउपणाचागारा ॥ तोदंभुअैसा ॥ १८ ॥ जैसीआपुलिजननी ॥ नग्नदाविदौविकीजनि ॥ तेतीर्थ
परिपत्तनी ॥ कारणहोय ॥ १९ ॥ किविद्यागुरुउपरिस्था ॥ वांवायिलेयाचोहग ॥ इहदाचिपरिअनिदा ॥
हेतुहोती ॥ २० ॥ पैआंगेबुउतामहापुरी ॥ जेवगळेकाठिपैलतिरि ॥ तेनावचिबांधलिशिरी ॥ बुउनेजैसी
॥ २२० ॥

कारणजे जिविता ॥ तेवानित्ते जरिसे सविता ॥ तरि अन्नचिपांडुसुता ॥ होय विष ॥ ११ ॥ तैसा दृष्टा
 दृष्टा चासखा ॥ धर्मजाता तोफो करिजे दृष्टा ॥ तरि तारिता चितोदाया ॥ कागी होये ॥ १२ ॥ सुणो
 निवाचे चाचौबारा ॥ द्यातळा धर्मचापसारा ॥ धर्मचिअधर्म होय विरा ॥ तो शंभुजाणे ॥ १३ ॥ आता
 मूर्खचिये जिभे ॥ अक्षराचा ओंबुखासुभे ॥ आणितो ब्रह्मसभे ॥ तरिसे जैसा ॥ १४ ॥ कामादुरितो
 काचा घोडा ॥ गजपति हि मानी थोडा ॥ काका दिये वरि लिया सरडा ॥ स्वर्गुतीनिच ॥ १५ ॥ तणाचे नि
 इंधने ॥ आगिधावे गगने ॥ धुळरबळे मिने ॥ नगणिजे सिंधू ॥ १६ ॥ तैसामाजे स्त्रियाधेन ॥ वि
 द्यास्फुति बहुते माने ॥ यकदिचे निपराने ॥ अत्नबुजेसा ॥ १७ ॥ अभ्रछाये चिया जोडि ॥ निदे
 वघरमाडि ॥ मृगांबुदखो निफोडि ॥ पाणियोड मुठ ॥ १८ ॥ किं बहुना असेसे ॥ उत्तणेजे संपतिमि
 से ॥ तो दुर्पुगा अनारिसे ॥ नबोले घेई ॥ १९ ॥ आणिजगावे दिवि श्वासु ॥ विश्वासि वे च्छईसु ॥ जगी
 यकतेजेसु ॥ सूर्येहा ॥ २० ॥ जगस्येह अस्यद ॥ येकसार्वभौमपद ॥ नमरणे निर्व्यवाह ॥ जगापठिये ॥ २१ ॥

प्रणौ निजरि उत्साहे ॥ याते कानु जाय ॥ किते आयिको नि मछर कोठ ॥ पाहिला गी ॥ ३२ ॥ खणे इच्छ
राते स्वाये ॥ तया वेद विषसुये ॥ गोखामाजी त्राये ॥ भंगी तेस ॥ ३३ ॥ पंतगाना वेडे ज्योति ॥ स्वयोलाभा
नुचि खंति ॥ कांठि रिभे अपांपति ॥ वैरीकेला ॥ ३४ ॥ तैसा अहमानाचे निमोहे ॥ ईश्वराचे नामहि
नसाहे ॥ बापाते खेण मजेहे ॥ सवति जाति ॥ ३५ ॥ असामान्यताचा पुष्टगुंडु ॥ तो अतिमानि प
रमत्तु ॥ रौरवाचारु ॥ मार्गु तोहा ॥ ३६ ॥ आणि पुठि त्वाचे सुख ॥ देखण्याचे होउनि मिष ॥
चेठे क्रोधाचे विय ॥ प्रनोवती ॥ ३७ ॥ शितका चिया भरि ॥ तातलाते लि आगी उठी ॥ चंद्रे देखोनि
जेके पाठि ॥ कोळ्का जैसा ॥ ३८ ॥ विम्बाचे आयुष्य जेणे उजेके ॥ तो सूर्य उदये देखोनि सवके ॥ पा
पिया फुटति ठोके ॥ उडुमाचे ॥ ३९ ॥ जगाचि सुख पाहाटे ॥ चोरामरण हनि नि दृष्ट ॥ दुधाचे काळ
कुरे होय व्याधि ॥ ४० ॥ अगाधे समुद्र जेके ॥ प्रासिता अधिका जेके ॥ वेडवाग्नी नमीके ॥ शांति
कहि ॥ ४१ ॥ तैसा विद्याविनोद विभव ॥ देखे पुठि त्वाचि देव ॥ तव तवरो सुदुणावे ॥ क्रोधुतो जाण ॥ ४२ ॥

आणि मनसर्पाचि कुटि ॥ डोळे नाराजाचि सुटि ॥ बालेणें तें दृष्टि ॥ ईगळचि ॥ ४३ ॥ यरजे त्रि या जात
 ते ति खयाचे करवत ॥ असे सबा ह्य ख सासीत ॥ जयाचे गा ॥ ४४ ॥ तो मनुष्या धमुजाण ॥ पा
 घाचे अवतरण ॥ आता आयि कुखुणे ॥ अज्ञानाचि ॥ ४५ ॥ तरि सीतो घ्मा स्पर्शी ॥ निवाडुने पाषा
 णुजैसा ॥ कारात्रि आणि दिवसा ॥ जासुंधु तो ॥ आगी उदिला आरो गणे ॥ जैसा खाद्या खाद्य न
 ह्यणे ॥ कापरि सुपाडे नणे ॥ सानया लोहा ॥ ४६ ॥ ना तरि नाना रसि ॥ रिगो निदर्वि जैसि ॥ परि
 स स्वादासि ॥ निणे जेवि ॥ ४७ ॥ का वारा जैसा पारखी ॥ नके चिमार्ग मार्ग विषि ॥ तैसे कथा कथ्य
 विवेकि ॥ अंधपणजे ॥ ४८ ॥ हचो खेह मैळ ॥ ते सनेणा निया बाळ ॥ देखते केवल ॥ सुखीचि वा लि ॥ ४९ ॥
 तैसे पाप पुण्याचे खिचेटे ॥ कसनि खाता बुद्धिचेटे ॥ कुडुम हुर न वटे ॥ असे जे दृशा ॥ ५० ॥ तयाना
 वअज्ञान ॥ या बोला नाहि आन ॥ यवे साहि दोषाचे चिन्ह ॥ संधीतले ॥ ५१ ॥ इहि साहि चि दोषां
 गी ॥ हे असुरि संपति रादुगी ॥ जैसे थोर विषय सुभगे आंगी ॥ आंगसाने ॥ ५२ ॥ कति घाव न्हीचि
 पोति ॥ पा हाता थोडे रायग मति ॥ परि विष्ठी ही प्राणा हुति ॥ कस निपु रे ॥ ५३ ॥ धात्र याहि गेल यारा

रण ॥ त्रिदोषी नचुके मरण ॥ तथाति हिचिह दुणिजाण ॥ साहिदोयहो ॥ ५५ ॥ यिहि साहिदोविसंपु
षी ॥ जालिचियचिउभारणी ॥ खणोनिआसुरिउणी ॥ संपदानके ॥ ५६ ॥ परिकुरयहाचिजैसि ॥
प्रांदिमीबेयेकचिरासी ॥ कायेतीनिंदकापासी ॥ अशेषपापे ॥ ५७ ॥ मरफारयाचेओग ॥ पडेघा
तिअवघेचिरोग ॥ कुमुहुर्लिदुर्योग ॥ यकवटति ॥ ५८ ॥ काआयुष्यजालियेवेके ॥ सेकियेसातवे
बुलिमिने ॥ तैसेसाहिदोयसगळे ॥ जोउति तथा ॥ ५९ ॥ विश्वासलाआतुउविजेचोरा ॥ सिणला
सुरियजेमहापुरा ॥ तैसेदोषियिहि नरा ॥ अनिकृदिजे ॥ ६० ॥ मोक्षमार्गकेडे ॥ जैयाचाआंबु
स्वापडे ॥ तैननिगेखणोनिबुडे ॥ संसारीता ॥ ६१ ॥ अधमायोनचिपाउटि ॥ उतरतजोकिरीटि
स्वभावराहितुवटि ॥ वैसणीचे ॥ ६२ ॥ हेअसोतयाचाटायि ॥ मिनेनिसाहिदोकीयिहि ॥ आ
सुरीसंपतिपाहि ॥ वाठविजे ॥ ६३ ॥ असियायादोनी ॥ संपदाप्रसिद्व्याजनि ॥ सांगेतलियाचिनि
वगनात्का ॥ ६४ ॥ श्लोक ॥ देवीसंपदिमोक्षायनिबंधायासुरीमाता ॥ मासुचः संपदंदैवीम

भिजातोसिपांडव ॥ ५ ॥ टिका यादोहोमाजिपहिलि ॥ देवीजेस्यणितलि ॥ तेमोक्षसूर्यपाहा
 त्नी ॥ उखाचिजाण ॥ ६ ॥ येरीजेदुसरि संपतीकाआसुरी ॥ तेमोहोलाहाचिखरि ॥ सारखनिजि
 वा ॥ ६ ॥ परिहोआइकोनिमने ॥ भयघेसीहसणे ॥ कायिरामिचादिने ॥ धाकुधरिजे ॥ ६ ॥
 हेआसुरीसंपतीतया ॥ बंधात्तागिधनंजया ॥ जेसाहिदोवायिया ॥ आम्पोहोये ॥ ६ ॥ तुतव
 पांडवा ॥ साधितद्वियादेवा ॥ गुणनिधीवरवा ॥ जन्मत्तासि ॥ ६ ॥ स्रणोनिपार्थातुवा ॥ देविसं
 पतिस्वामिया ॥ होउनियावउवाया ॥ कैवत्ताचया ॥ २०० ॥ श्लाक ॥ दोभूतसर्गोत्तोकस्मिन्दै
 वआसुरएवच ॥ देवोविस्तरशः प्राक् ॥ आसुरपार्थमेष्टु ॥ ६ ॥ टिका ॥ आणिदेवाआसुरा ॥ संप
 तिवतानरा ॥ अनादिसिद्धउजरा ॥ राहादिचाआहे ॥ ७ ॥ जैसेरात्रिचाअवसरि ॥ याणरिजेनि
 शाचरि ॥ दिवसासुबवहारि ॥ मनुष्यादिकि ॥ ७ ॥ तैसियाआपुलियाराहादि ॥ वर्ततातीदोकीस
 दि ॥ देवीआणिकिरीदि ॥ आसुरीयथ ॥ ७ ॥ तेवीचिविस्तोरदेवी ॥ शानकथनादिप्रस्तावी ॥ मागि

लीगंधिवरवी ॥ सांगीतलि ॥ ७१ ॥ आता आसुरी जसृष्टि ॥ तेचिचि उपल उगादि ॥ अवधानाचिदि हि
द्वेपानिदि ॥ २०५ ॥ तरिवाच्य वीणनादु ॥ नदिक्वणाहिसादु ॥ काअपुस्थिमकरंदु ॥ नलभे जैसा ॥ ७२ ॥ तैसी प्र
कृतिहे आसुरीये कृति नके गाचरा ॥ अवयेकाधेरा रीर ॥ मात्कृतिना ॥ ७३ ॥ मगअविच्छेर लात्ता कुड ॥
पावकृ जैसा जोड ॥ तैसि प्राणिदेही सापड ॥ आद्यपलिहे ॥ ७४ ॥ तेकेळिजेवादि उसा ॥ तेचि आंतुरसा
देहाकारु होयुतैसा ॥ प्राणियाचा ॥ ७५ ॥ आतातयाचि प्राणिया ॥ रूपकुरुधनं जया ॥ घडिलेजे
आसुरीया ॥ दामरुदि ॥ २०६ ॥ तरिपुण्यात्तागी प्रवृत्ति ॥ कापापाविसई निवृत्ति ॥ याजाणण्याचि
राति ॥ तयाचेमन ॥ २०७ ॥ निगण्याआणि प्रवेशा ॥ चित्तनेरीतु आवशा ॥ काराकीटुजैसा ॥ जाचि
नला ॥ २०८ ॥ कादिधले मागुतेयइल ॥ किनेयेहेपुठिल ॥ नपाहातादेभांअवला ॥ मुखचोरा ॥ २०९ ॥ प्रो
क ॥ प्रवृत्तिचनिवृत्तिचजनानविदुरासुरा ॥ नशोचं नापिचाचारो नसयुतेयुं कियते ॥ २१० ॥ हि का
तैसिया प्रवृत्तिनिवृत्तिदोन्ही ॥ नेणी जति आसुरिजनि ॥ व्याणिशुचित स्वामी ॥ नदेखलिते ॥ २११ ॥

१४

रा

कविमासां डिलकोलिसा ॥ परिचोखी लोयी लबायसा ॥ राक्षसुहिमांसा ॥ विठोरके ॥ ८५ ॥ परिआसुरा
 प्राणिया ॥ शौचनाहिधनंजया ॥ पवित्रत्वजेविभांडया ॥ मद्याचया ॥ ८६ ॥ आणिवाठविताविधिचि
 आस ॥ कापाहातावडिलाचिवास ॥ आचाचिभाष ॥ निणेचितो ॥ ८७ ॥ जैसेचरणसेठियेचे ॥ काधा
 वणेवारयाचे ॥ जाळणेआगीचे ॥ भलेतेउते ॥ ८८ ॥ तैसेपुढासूनिस्वैर ॥ आचरतितेअसुर ॥ मसेसी
 वैर ॥ सदाचितया ॥ ८९ ॥ जरिनांगियाआपुलिया ॥ विंचुकरीयुतकुलिया ॥ तरिसाचाबोलिया ॥ बोल
 तीते ॥ ९० ॥ अपानाचेनितांडे ॥ जरिसुंगंधायेणघडे ॥ तरिससुतयाजोडे ॥ आसुराते ॥ ९१ ॥ अैसेते
 नकरिताकाहि ॥ आंगेचिबोखेठपाही ॥ आताबोलतीलेतेनवाइ ॥ सांगीजेत ॥ ९२ ॥ श्लाक ॥ असत्य
 मप्रतिवृते जगदादुरनीश्वर ॥ अपरस्परसंभृतं क्रियेयत् कामहैतुकं ॥ ९३ ॥ टिका ॥ यरुकीकरुयाचा
 यश्चौग ॥ तेत्यासिकेचेनीठआंग ॥ तैसाअसुराचाप्रसंग ॥ प्रसंगेपरिस ॥ ९३ ॥ अधवणिचेजेवितो
 उ ॥ उगळिधुवाचेउभउ ॥ हेजाणिजेतेविउघड ॥ सांघोतेवाल ॥ ९४ ॥ तरिविश्वहाअनादिसना ॥ य

थनियंता ईश्वररावो ॥ या वडिये न्यावो अन्यावो ॥ निवडीवे दु ॥ १० ॥ वेदिअ न्याइपेड ॥ तो निरय भो
गेदेंडे ॥ संन्यायितो सुखोड ॥ स्वर्गीजिये ॥ ११ ॥ औसिविष्व व्यवस्था ॥ अनदिजेहे पार्था ॥ यियेते लण
तिते रथा ॥ अवघेहे ॥ १२ ॥ यज्ञ मूठ ठकिलेया गी ॥ देवपिस प्रतिमा लिंगी ॥ नागविले भगेवयोगी ॥ स
माधी भुमी ॥ १३ ॥ येथुआपुले निवेक ॥ भोगीजेजेवेयने ॥ हेवाचूनि के वेगने ॥ पुण्यओह ॥ १४ ॥ नाअ
सत्कपेपे आंगीके ॥ वेगनेवेराकि नठके ॥ औसा गादिजेविण विसयसुखे ॥ तेचिपाप ॥ १५ ॥ प्रायघे
पति संपन्नाचे ॥ ते पाप जरिसाचे ॥ तरिसर्वस्वयेतयाचे ॥ हे पुण्य फुळकि ॥ १६ ॥ वळिअवकातेस्वाये ॥
हेचिवाधीतजरिहोये ॥ तरिमासियाकानके ॥ निसंतान ॥ १७ ॥ आणिकुत्रेशोधूनिदोकी ॥ कुमारे
चियेसुभलग्नी ॥ मेळवीजति प्रजासाधनी ॥ हेतुजरि ॥ १८ ॥ तरिप्रमुपक्षादिजानि ॥ जन्यामीति
नाहिसेतती ॥ तयाकोण प्रतिपती ॥ विवाहकेले ॥ १९ ॥ चोरियेचे धनआले ॥ तरितेकोणासिविषजा
ले ॥ वालभेपरद्वारेकेले ॥ कोटीकोणीहोये ॥ २० ॥ ह्यणौनिदवोगासावि ॥ तोधर्मीधर्मभोगवि

१५

आणि परत्राचा गावि ॥ कुरीतो भोगी ॥ परिपरत्र नो देवा ॥ नदिसे खणो निते वावो ॥ आणि कतीनि
 मे मारावो ॥ भोग्यासिकोणु ॥ ७ ॥ येथ उर्वरीया इंद्र सुखी ॥ जैसा का स्वर्ग लोकी ॥ तैसा चिठ्ठी मी नरकी
 लोक तुम्हाचे ॥ ८ ॥ खणानि नरक स्वर्ग ॥ नरक पाप पुण्या भाग ॥ दाहिय यिसुख भोग्य ॥ कामाचा चि
 तो ॥ ९ ॥ या कारण काम ॥ स्त्री पुरुष युग्मे ॥ मिळतिते थजन्मे ॥ वाघे वेजग ॥ ३१ ॥ आणि जे जे अ
 भिकाखे ॥ स्वार्था लागते हे पोय ॥ पाटी परस्पर देखे ॥ कामूचि नासि ॥ १० ॥ एवं कामु वाचू निका
 हि ॥ जगामू बचि आननाहि ॥ असे वाळती पाहि ॥ आसुरते ॥ ११ ॥ आता असो हे छिद्राळ ॥ बोलि
 न कर पद्यळ ॥ सांगताचि सफोळ ॥ होतसे वाचा ॥ १२ ॥ श्लाक ॥ ततां दृष्टि मवद भ्य न द्यात्मा नो
 त्म बुद्ध्यः प्रभवं युग्म कर्मणः क्षयाय जगता हिता ॥ १३ ॥ टिका ॥ आणि स्वराचिया खेति ॥
 नुसधिया करिती चाथी ॥ हहि नाहि चिति ॥ निश्चयो ये कु ॥ १४ ॥ किं वहुना उघड ॥ ओं गी भ रू नि
 यापां खाड ॥ नास्ती कपणाचे हाड ॥ राविते जिवी ॥ १५ ॥ ते केळि स्वर्गता गी आदरु ॥ कानर काचा

१५

आउदास॥ या वासनाचा अंकुश॥ ज्योतिगेल्या॥ १६॥ मग केवळ येद हखाडा॥ अमध्यादकाचा बु
उबुडा॥ विषयपंक्ति सुहाडा॥ बुडालगा॥ १७॥ जै आगवे हो ती जळचर॥ तै ओहि मिळति ठि वर॥ का
पडावे हो यशरी॥ तै रागा उदया॥ १८॥ उदै जणे के तुचे जैसे॥ विश्वा अनिष्टविदोष॥ जन्मती ते
तैसे॥ लोका आटु॥ १९॥ विरुळ लिया अशुभ॥ फुटती तै तै कांभ॥ पापाचे कीर्ति संभ॥ चालते ते॥ २०॥
आणि मागा पुढा जाळणे॥ वाचूनि आगी काळिनेणे॥ तैसे विरु चिये ककरण॥ भुलते या॥ २१॥
परितेचि गाकरणे॥ आदरितिसंभमे जणे॥ तै आईकपार्थावणे॥ श्रीनिवासु॥ २२॥ श्लोक॥ काम
मात्रिसुदुःपूरंदंभमानमदान्विताः माहाज्ञु लीत्वा सद्गुरु प्रवर्तते सुचित्रताः॥ १०॥ टिका॥
तरि जाळे पाणिये नभरे॥ अगे इंधन नपुरे॥ तया दुर्भरा चिये धुरे॥ भुक्क जुजा॥ २३॥ तया का
माचोवा लावा॥ जि विधरु निपांडवा॥ इंधमानाचो मळावा॥ मळविली॥ २४॥ मात लिया कुं
जरा॥ आगळि जाळि मदिरा॥ तै सामदाचा ताल तवजरा॥ चढता आंगी॥ २५॥ आणि अ

स्त्रिय परौते ॥ ना ही विलुणो निचिते ॥ निश्चयो कला ॥ ३५ ॥ मगतया चिस्त्रिभोगा ॥ का जीपा ताळ
स्यर्गा ॥ धावती दिग्भिभागा ॥ परौते हि ॥ ३६ ॥ स्त्राक ॥ आशा पाराशतेर्बद्धाः कामक्रोधं पराय
णाः ॥ ३७ ॥ ते कामभोगार्थं मन्यायेनार्थसंचयान् ॥ ३८ ॥ टिका ॥ अमिषकवदु थोरि आशा ॥
न विचरि ताणि विमासा ॥ तैसे किजे विषयाशा ॥ तथा सिगा ॥ ३९ ॥ वांछित तवन पवति ॥ मग
करडिये चि अशचि संतति ॥ वाटु वाटु उहोति ॥ कारा विडे ॥ ४० ॥ आणि पसरिता अभिका
सु ॥ अपूर्ण होयते चिदु सु ॥ एवं कामक्रोधाहू नि अधि कु ॥ पुरसार्थु नाहि ॥ ४१ ॥ दहाखाळ
णे रात्रि जागो वा ॥ राणां तरिया जैसा पांडवा ॥ अहो रात्रि हिं विसावा ॥ अटे चि ना ॥ ४२ ॥ तैसे उ
चो नितो टिते कामे ॥ ने हटति क्रोधा चिये ठे मे ॥ त ही रागदुष प्रे मे ॥ न मा तिके हि ॥ ४३ ॥ ते वी चि
जि वी चिया हावा ॥ विषय वासना चामे काव ॥ केला परितो भोगावा ॥ अर्थे कि ना ॥ ४४ ॥ प्रणो नि भो
गावया लोगा ॥ पुरता अर्थ पैगा ॥ आणाव या जगा ॥ सोवति सैरा ॥ ४५ ॥ यको ते साधू नि मारि ती

१७

येकाचे सर्वस्व हरिति ॥ येकाकाजी उभारिति ॥ अणाययेत्रे ॥ ४४ ॥ पासिकेपोती वागुरा ॥ सुणीस
 साणेचिकादिखाचरा ॥ घिउनिनिगतिडोंगरा ॥ पारधीजैसे ॥ ४५ ॥ तेणेपोसावयोपोट ॥ मासनिप्रा
 णियाचेसंघाट ॥ आणित्तीतैसेनिठ्ठ ॥ तेहिकरिति ॥ ४६ ॥ परप्राणघाते ॥ मेळवितिविते ॥ प्रीनल
 याचिते ॥ तोषणेकैसे ॥ ४७ ॥ श्लाक ॥ इदमद्यमयालब्धमिमं प्राप्स्यमनोरथं ॥ इदमस्तीदमपिमेभ
 विद्यतिपुनर्देनं ॥ ४८ ॥ टिका ॥ अणेआजिमिया ॥ संपतिबहुतायेकाचिया ॥ आपुलाहातीकेलि
 या ॥ धननामि ॥ ४९ ॥ असाश्लाघोजवजाये ॥ तवमनआणिकहिवोह ॥ सेवचिह्णणपोह ॥ आ
 णिकाचेहिआणु ॥ ५० ॥ हेजेतुलेअसेजोडले ॥ तयाचेनिभांडवले ॥ काभाघेईनउरले ॥ चराचर ॥ ५१ ॥
 असेनिधानविश्वाचया ॥ प्रीचिहोईनस्वामिया ॥ मगदिरिपेटतया ॥ उरानेदी ॥ ५२ ॥ श्लाक ॥ असौ
 मयाहतः शत्रुहेनिष्ठेचापरानपि ॥ ईश्वरोहमहंभोगीसिद्धोहंबलवानसुखी ॥ ५३ ॥ टिका ॥
 हेमारिलेतेवरथोडे ॥ आणिकहिसाधीनगोठे ॥ मगनांदैनपवाडे ॥ येकलाप्रीचि ॥ ५४ ॥ मासिहोती

१७

का मारि ॥ तिये वांचू निये रे मारी ॥ किं बहुना चराचरि ॥ ईश्वर तो मी ॥ ५३ ॥ मी भोग भुमी चारा वा ॥
आजि सर्व सुखा रावो ॥ खणै निरंद्र वावो ॥ माते पाहुनि ॥ ५४ ॥ मिमन वाचा देहे ॥ करी ते कैसे नके ॥ कै
मज वांचूनि आहे ॥ आहासि दु आनु ॥ ५५ ॥ तव चि बळिया काळु ॥ नदिसे मिज व अतुर्बळु ॥
सुखाचा कीर निखळु ॥ राशि वामीचि ॥ ५६ ॥ श्लोक ॥ आख्या भिजन वान स्मिकोन्या स्ति सदशा
मया ॥ यक्ष्ये दास्यामि मोदि व्यश्य ज्ञान विमोहिताः ॥ ५५ ॥ टिका ॥ कुबेर आधिक्य होये ॥ परितो
नेणे मासी सोये ॥ संपत्ति मज समनेके ॥ श्रीनाथुहि ॥ ५७ ॥ मासिया कुळाचा उजाळु ॥ काजाति जे आ
चामेळु ॥ पाहाता ब्रह्माहि हळु ॥ उणाचि दिसे ॥ ५८ ॥ खणै निमिरवति नामे ॥ वाया इश्वरादि आद्ये
नाहि मज सीसरि पावे ॥ तैसे कोव्ही ॥ ५९ ॥ आतां तो पत्ता अभिचार ॥ तया करी नजीर्णो दार ॥ प्रति
दिन परमास ॥ यागवरी ॥ ६० ॥ माते गाती वानिती ॥ नाचे नयेरि क्षविति ॥ तयोदयी न मागसि
ते तेव स्त ॥ ६१ ॥ माजिरा अन्न पाणि ॥ प्रमदाचा आंविंगणि ॥ हायीन मित्रि भुवनी ॥ आनंदाकार ॥ ६२ ॥

१८

कायि बहुसागोरेसे ॥ ते असुरप्रकृतिपिसे ॥ सुरवितिअसासे ॥ गगनौलेतिये ॥ ६३ ॥ स्तोत्र ॥ अनेक
 चित्तविभ्रंता मोहजाकसमावृताः प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेशु चै ॥ ६४ ॥ टिका ॥
 ज्वराचेनिधारोपे रोगीये भलेसे चिजले ॥ चावळतिसं कळे ॥ जाणेतेतैसे ॥ ६४ ॥ अज्ञानआत
 लेधुळि ॥ स्रणोनिआशावाहाडुळि ॥ भंवडिजतिअंतराळि ॥ मनोरथाचा ॥ ६५ ॥ अनीयमआषा
 षमेघ ॥ कासमुद्रोप्रीअभंग ॥ तैसेकामितिअनेग ॥ अखंडकाम ॥ ६६ ॥ मगपैकामनाचिति
 या ॥ जिबीजालेवेतरिया ॥ वोरपिलियै केदि ॥ कमळेजैसी ॥ ६७ ॥ कापाषाणचियामाथा ॥ हांदि
 फुटलिपार्था ॥ जिवितैससर्वथा ॥ वुटके जाले ॥ ६८ ॥ तेकाचळतियेरयणी ॥ तमाचीहोयपुरवणी ॥
 तैसामोहोअंतः करणि ॥ कोठेचित्तगगे ॥ ६९ ॥ व्याणिवाठजवजवमोहो ॥ लवतवविषयीरोहो ॥ वि
 षयतेथरावो ॥ पातकासि ॥ ७० ॥ पापेआपुलेनिथावे ॥ जवकरितीमेकावे ॥ लवजिताचिआद्य
 वे ॥ येतीनरक ॥ ७१ ॥ स्रणोनिगासुमति ॥ याकुमनोरथपाळति ॥ तेआसूरयतीवस्ति ॥ तयागया ॥ ७२ ॥

१८

न

जथ अर्से पत्र तस्वर ॥ ख दिरो गराचेडांगर ॥ आ तत्कोतेदिसागर ॥ उ तताति ॥ ७३ ॥ जथ या त
नाचि खेणि ॥ हनिचन वी जमजाचणि ॥ पडति तीयेदारुणि ॥ नरकलोकि ॥ ७४ ॥ असे नरकाचिये से
ते भागीजेजे जन्मले ॥ तिहिदेखो भुलले ॥ येजितया गी ॥ ७५ ॥ ये फीवीयागारिक्रिया ॥ आ हा
णतेचिधनेजया ॥ परिविपुकाति आचरोनिया ॥ नारकिजेसे ॥ ७६ ॥ वरुभाचिया उजरिया ॥ आपण
यापति बुद्धिया ॥ जोडुनितोमतिजेसिया ॥ अहवपणे ॥ ७७ ॥ स्त्रोक ॥ आत्मसंभावितास्त व्या धनमा
नमदान्विता ॥ यजंते नामयज्ञैस्ते दंभेनाविधिपूर्वकं ॥ ७८ ॥ रि का ॥ तैसे आपणया आपण ॥ मानी
ति महतपण ॥ पुगती असाधारण ॥ शर्वतेणे ॥ ७९ ॥ मगतबोनेणतीकैसे ॥ आरिवाको हाचेखां
बजैसे ॥ काउधवते आकारे ॥ शिकाराशी ॥ ८० ॥ तैसे आपुलिये बखे ॥ आपण चिरि सता जीवे ॥
लृणाही हूनि आघवे ॥ मानितिनच ॥ ८१ ॥ वरिधनाचिया मदिरा ॥ माजउनिधनु र्धरा ॥ कुर्याह
यविसरा सौवलेकेले ॥ ८२ ॥ जयावांगी आयिती असी ॥ तेथय हाचि गोष्टि कायि सी ॥ अरिकायि

पि सी॥ न करि तिगा ॥ ८२ ॥ स्रणानिकोणयेकेवेके ॥ मों मद्याचेनिबके ॥ यागचि हिठवाके ॥ आ१ ॥ ७५
 रितीगा ॥ ८३ ॥ नाकुंडेमंडपवेदि ॥ नाउचितासाधनसमृद्धि ॥ आणितयासितवविधी ॥ इंद्रचिसदा ॥ ८४ ॥
 द्वात्रास्रणाचेनिनावे ॥ आउकारेनहिनकावे ॥ अैसेतेथयावे ॥ द्वागैलकोणहा ॥ ८५ ॥ येवासुस्वा
 धाभोक्सा ॥ गायिपुठेरउनिजैसा ॥ उगाणाचेतिक्षीररसा ॥ बुद्धिवंत ॥ ८६ ॥ तैसेयागचेनिनावे
 जगवाउनिहोवे ॥ नागवितीआघवे ॥ अहेरावाही ॥ ८७ ॥ अैसाकाहिआपुलिया ॥ होमितिजेउ
 जरिया ॥ तेणेकामितीप्राणिया ॥ सर्वनाम्नु ॥ ८८ ॥ मगपुछाभेरीनिशाण ॥ त्माउनितेदिक्षितपण
 जगीफोकरितीआणवावोवावो ॥ ८९ ॥ तेकामहूवेतेणेअधमा ॥ गर्वाचेठमहिमा ॥ जैसेतेवेदि
 धतेतमा ॥ काजकाचे ॥ ९० ॥ तैसेमौख्यघणावे ॥ अौधत्युंचोवे ॥ अहंकारुदुणावे ॥ अविबेकुहि ॥ ९१ ॥
 मगदुजयाचिभाष ॥ नुरवावयानिःशेष ॥ बकियेपणाअधिक ॥ होयवळ ॥ ९२ ॥ अैसाअहंकारा
 बळा ॥ जातयायेकवळा ॥ दर्पसागस्तेका ॥ सांडुनिउते ॥ ९३ ॥ मगबोसंडलेनिदर्प ॥ कामाहिपि

१९

१९

त कुसुपे ॥ तया धर्मी सै च पत्निये ॥ क्रोधाग्निता ॥ १५ ॥ तेथ उक्ता ग आगी खर मरा ॥ तिला तुपा
चिया कोठारा ॥ लागला आणिवारा ॥ सुटला जैसा ॥ १६ ॥ श्लोक ॥ अहंकारं बलं दर्पं कामं क्रोध
च संश्रिताः ॥ मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषंतोभ्यसूयकाः ॥ १७ ॥ टिका ॥ तैसा अहंकार स्वका आ
त्मा ॥ दर्पं कामं क्रोधी गुठ्या ॥ या दोही चामे बुजाला ॥ जया चारायि ॥ १८ ॥ ते आ पुढिया सवे वा
मग कोणिकोणिहिंसा ॥ या प्राणिया ते विश्वा ॥ न साधितिगा ॥ १९ ॥ पहिले तव धनु र्धरा ॥ आ
पुढिया मासा रूधिरा ॥ वेचु करि ती अभि चारा ॥ लागो निया ॥ २० ॥ तेथे जाकी तुजिये देहे ॥ या
माजि जो मी आहे ॥ तया आत्मया मज घाये ॥ वाजती ते ॥ २१ ॥ आणि अभि चारि कितिहि ॥ उपर
विजे जे बुले काहि ॥ तेथे चैतन्य मी पाहि ॥ सीणु पावे ॥ २२ ॥ आणि अभि चार वेगळे ॥ विपाय जे
अवगळे ॥ तया राकि ती रटाके ॥ पै सुन्याचि ॥ २३ ॥ सति आणि सतुरुष ॥ दानशी नयाग्नी ॥ तपस्वी

अतौ किं॥ सव्यासीजे॥ काभगतहनमाहासे॥ यमासीनिजाचिधामे॥ निर्वाळलिहोमध
 मे॥ श्रौतादिके॥ ३॥ तथादेवाचे न काळकुरे॥ वासोनि तिसरे॥ कुबोलाचि सदे॥ सुतिकांडे॥
 श्लोक॥ तानहं द्विषतः क्रूरान्संसारेषु नराधमान्॥ क्षिपाम्यजस्रप्रभानासुरींश्च वयोनिषु
 १९॥ टिका॥ वैसे० वाघवाचिपरि॥ प्रवर्तते प्रासावैरी॥ तरितयापापिया जेमी करि॥ ते आर्क
 पा॥ ॥ तरि मनुष्ये देहाचा तागा॥ घेउनि रसति जे जगा॥ ते पदवी हिरोनि पै गा॥ हे सेरे निधि
 जे क्लेश गावी चाउकरडा॥ भवपुरि चा पाणवडा॥ ते तमोयोनी तथा मुखा॥ रतिचिंद॥ ७॥ मग आ
 हाराचे निनावे॥ जेथे तृणहिनु गवे॥ ते व्याघ्र वृश्चिक आडवे॥ ते सिये करि॥ ८॥ ते थक्षुधादुः
 खे बहुते॥ तोडुन स्वाता आपणयाते॥ मर मरौ माघौते॥ होतचि असति॥ ९॥ काआपुला गरम
 जाळि॥ जळतया आंगाचि पेंदळि॥ ते सर्पचि करि विळि॥ निरंधला॥ १०॥ परिघेत कास्या सुघा
 पे॥ ये तुले निहि मापे॥ विसावातया नायेपे॥ दुर्जनासी॥ ११॥ हे सेन कल्पाचिया कोडि॥ गणिता

हि संख्या थोडी ॥ ते तुलावे कुन कठि ॥ क्लेशोनि तथा ॥ १२ ॥ त ही तथा सिजेथे जाणे ॥ ते थिचे हे पहि
 लेपणे ॥ त पाउनि येरदास्ते ॥ न होति दुःख ॥ १३ ॥ स्त्रो क ॥ आसुरी योनि मापना मूला जन्म निज
 न्मनि ॥ माप्र प्राप्यै व कौं ते य ततो यां सुधमंग ति ॥ १४ ॥ टिका ॥ हा गवो वरि ते संपती आसुरि ॥ अ
 धोगति अवधारी ॥ जोडिलि ति हि ॥ १५ ॥ पाटिया घा रिता मसा ॥ योनि तो अलु मा लु दे सा ॥ दे हा
 चा धारा चा उसासा ॥ आधि जो हि ॥ १५ ॥ तो हि मी को ल्हा वा हिरे ॥ मग तम चि हो ॥ ती ये क
 सेर ॥ जेथे गेले अंधारे ॥ काळवंडे जे ॥ १६ ॥ जया चया पाप चिळ सि ॥ नर कचे ती विव सि ॥ सिणु जाये
 सु की ॥ सिणे जेणे ॥ १७ ॥ मळु जेणे मैके ॥ तापु जेणे पोवे ॥ जया चे नि ना व सके ॥ मा हा भय ॥ १८ ॥
 प्रापा जया चा कांटा वा ॥ उपजे अमंगळ अमंगळा ॥ विटा लु हि विटाळा ॥ भिये जया ॥ १९ ॥ हे से वि
 ष्वा चया वोखट या ॥ अधम जे धनं जया ॥ ते तै भोगु निया ॥ तामसा योनि ॥ २० ॥ आ हा संग
 ता वा चारु ॥ कगरे मूर्खि के वेढे ॥ जोडिले निरय ॥ २१ ॥ कापि सया ते आसुर ॥ संपति पोषि ति वा

री

होति

आठ विता मन खिरे ॥

२१

७२॥ जयादिधत्ते ध्वजो ॥ पतनवैस ॥ २२ ॥ अणोनितुवा धनु धरि ॥ नक्रवे गा तिया मोहरा ॥
 जेउतावासुधसुरा ॥ संपतिवंता ॥ २३ ॥ स्तोत्र ॥ त्रिविधनरकस्येदं दारं नारानमात्मनः ॥ कामक्रो
 धस्तथात्मे भुत्त स्मोदत्त च यं त्यजेत् ॥ २४ ॥ ॥ का ॥ आणिदंभादिदोष साहि ॥ हेसंपूर्ण जया
 चागई ॥ तेसु जावेहे कायि ॥ खणो किर ॥ २५ ॥ ॥ परिकामक्रोधलोभ ॥ यातिहिचैधोब ॥ धां बे ते
 धधसुभ ॥ पिबूते जाण ॥ २६ ॥ सर्वदुःखाभापुलया ॥ दर्शनाधनं जया ॥ पाठा उहे भलतया ॥
 दिधत्ते आहाति ॥ २७ ॥ कापापियानरकभोगी ॥ सुवावयात्तगी जगी ॥ पातकाचिदाटुगी ॥ सभा
 चिहे ॥ २८ ॥ तेरौरवगातवचिवरि ॥ आयिकि जति अपरांतरि ॥ जवहे ति न्ही अंतरी ॥ उरितिना ॥ २९ ॥
 धपायइं हि आशलग ॥ यातना इहिसबंध ॥ हाणि हाणि नके ति च ॥ हे चि हाणि ॥ ३० ॥ कायि बूढो
 लो सुभरा ॥ साधितले यानि कृष्णा ॥ नरकाचा दारवंटा ॥ त्रिशंकु हा ॥ ३१ ॥ याकामक्रोधलोभा ॥
 मा जिजिवे जो लो य उभा ॥ ते निरय पुरि ची सभा ॥ सन्मानुपावे ॥ ३२ ॥ स्तोत्र ॥ एतैर्विमुक्तः कौं

२१

तेयतमोक्षैस्त्रिभिर्नरः॥ आचरत्यात्मनः॥ श्रियस्ततोयाति परांगति॥ ३२॥ रिक्ता॥ ह्रणेनिपुडं
पुडतिक्किरीडि॥ हे कामादिदोषत्रिपुटि॥ युजावीचिगावोखटि॥ आघवाविषि॥ ३३॥ धर्मादिकांचौ
हिंसांतु॥ पुरुषार्थाचितैचिमातु॥ करावीजैसांघातु॥ सांडीतिलेहे॥ ३३॥ हेतिक्किजिविजव
जागती॥ तवरिक्कियाचिप्राप्ति॥ हेमासेकाननाइकति॥ देवोहिसंगे॥ ३४॥ जयाआपणपेपठि
ये॥ आत्मनाशजोभिये॥ तिणेनधरावीहेसोय॥ सावधाहोइजे॥ ३५॥ पोटिक्किंधोनियापाषाण
समुद्रिवाहिआंगवण॥ कांजियावयाजेवण॥ काळकूचे॥ ३६॥ इहिकामक्रोधलोभेसी॥ का
र्यसिद्धिजाणतैसि॥ ह्रणेनिगवोचिपुसि॥ ययाचांगा॥ ३७॥ जैकहिअवचेहेतिकडिसारव
कतुटे॥ तैसुखेआपुलियेवोठे॥ चालेकाभे॥ ३८॥ त्रिदोषीसांडीलेशरीर॥ त्रिकुटिफिरलयानग
र॥ त्रिदाघनिमाळयाअंतर॥ जैसेहोये॥ ३९॥ तैसाकामादिक्रितिधि॥ सांडिकासुखपावोनिजगी
सेसुलोहेमोक्षमार्गी॥ सज्जनाचा॥ ४०॥ मगससंगेप्रबळे॥ सहास्याचेनिबळे॥ जन्ममृत्ये

२२

निमाळे॥ निस्तरं सने॥४०॥ ते केळि आत्मानं देवाघवे॥ जे सदावसते बरवे॥ ते ते सेचि पाठण पावेतु
 ह् लोपेचे॥४१॥ ते थप्रियाचि परमसिमा॥ तो माउलि भेटे आत्मा॥ ते येखे विओटे डिंडिमा॥ से सारिक
 हे॥४२॥ हे साजो कामक्रोधलोभा॥ साडिकरुनि टोके उभा॥ तोय वळि येला भा॥ गोसावि होये
 ॥४३॥ स्त्रोक॥ यः शास्त्रविधिस्त्यज्यवर्तते कामकारतः॥ तससिद्धि मवाप्नोति न सुखं न परंगति
 ॥४४॥ टिका॥ नाहे नावडोमिकाहि॥ कामादि काचाचि गपि॥ दाटिलि जेणे डोर॥ आत्मचौ रा॥
 जो जगी समान सकुपु॥ हिलाहितदावितादिपु॥ तो ध्यमान्ये कलाबापु॥ वेदुजेणे॥४५॥
 नधरीचि विधीचि मिउ॥ नकरीचि धापुलिचाउ॥ वाळवितु गेलाको अइंद्रियाचे॥४६॥ कामक्रो
 धलोभाचिकास॥ नसोडिचि पाळि लिभाय॥ स्वेरचाराचे असोस॥ वळघळारान॥४७॥ तो
 सुटके चियावाहाणि॥ मगपि वोन व्हाये पाणि॥ स्वमिहीते काहाणि॥ दुरीचितया॥४८॥ आ
 णिपरत्रजवजाये॥ हे कीरतया आहे॥ परिअही कही नलोहे॥ ओगभोगु॥४९॥ तरिमासा

२२

त्वागीभुक्तत्वा ॥ आल्लुपाण बुडारिगत्वा ॥ कि ते थेहिपावत्वा ॥ नास्तीकवादु ॥ ५१ ॥ तैसेविषया
चेनिकोउ ॥ जेणेपरत्रोकेले उबेहे ॥ जवतोचि धाणिकीकेडे ॥ प्ररणेनेत्वा ॥ ५२ ॥ हवंपरत्रनास्वर्गु
नाधहिकीविषयभोगुतिथकेउताप्रसंगु ॥ प्रोक्षाचातो ॥ ५३ ॥ खणोनिकामाचेनिबेहे ॥ जो
विषयसेउपाहेसखे ॥ त्याविषयोनास्वर्गुमिळे ॥ नाउद्वेरेतो ॥ ५४ ॥ स्त्रोक ॥ तस्मात्कास्त्रं प्रमा
णेंतेकार्यकार्यव्यवस्थितौ ॥ ज्ञात्वाशास्त्रविधानोक्तं कर्मकर्तुमिहाहसि ॥ ५५ ॥ टिका ॥ या
कारणैवापा ॥ जयाआपुलिधार्थीरुपा ॥ तेणेवेदाचिया निरोपा ॥ आननकिजे ॥ ५५ ॥ पती
चियामत्ता ॥ अनुसरौनिपतिव्रता ॥ धनयासेआल्लुहिता ॥ भैरेचिते ॥ ५६ ॥ नातरिस्त्रीगुरुवच
ना ॥ दिष्टिदेतुजतना ॥ शिष्युआल्लभुवना ॥ माजिपैसे ॥ ५७ ॥ ह्मसोआपुलोटा ॥ हाताधार्थी
जरियावा ॥ तरिआदरेजेविष्टिवा ॥ पुढाकिजे ॥ ५८ ॥ तैसाभरोषाहिपुरुषार्थी ॥ जोगेसाविहो
खणेपार्थी ॥ तेणेस्मृतीस्मृतीमाथा ॥ बैसणेघाणे ॥ ५९ ॥ शास्त्रखणेनसांठावे ॥ तेराज्यहित्ण

२३

मानवे ॥ जे घेववी ते न ह्य णावे ॥ विषहिविरुद्ध ॥ १६० ॥ धै सिया वेदै कनिद्या ॥ जालयाजरिसु
 भग ॥ तरिके अग्रे धनिद्या ॥ अरणे गा ॥ ६१ ॥ वै अहितापासु नि काठि ती ॥ ही ते दे उनिवाठ वि
 ति ॥ नाहि मृती परोती ॥ मातुली जगा ॥ ६२ ॥ सृणो निब्रह्मे सिमिबवी ॥ तव हे को णी न सं द्यवी ॥
 अगा तुवाहिरे सी भजावि ॥ विरोषे सी ॥ ६३ ॥ जे आजितु अर्जु नाय ये ॥ करावया सयु शास्त्रार्थ
 ज न्मला सिव मर्थे ॥ धर्म च नि ॥ ६४ ॥ व्याणि धर्मा तु जुहे असे ॥ बोधे चि आले आपे से ॥
 सृणो नि अनारिसे ॥ करु नये ॥ ६५ ॥ कार्या कार्य विवे की ॥ शास्त्रे चि करावि पारखी ॥ अक यकु
 उते लोकि ॥ वाक्ये गा ॥ ६६ ॥ मग कस्य पणे खरे निगे ॥ ते तुवा आपु ले नि आंगे ॥ आचरो नि आद
 र्चंगे ॥ सारावे गा ॥ ६७ ॥ जे विष्य प्रमाण चि मुदि ॥ आजितु सा हाति असे सु बु दि ॥ लोक सं गृ हा
 सि विस्तु चि ॥ योग्यु हो सी ॥ ६८ ॥ एवं आसु र्गु आघवा ॥ साद्यो नि तेषि चानि गा वा ॥ तो हि दे वे
 पांठवा ॥ निरुपि ला ॥ ६९ ॥ यावरितो पां ठु चा ॥ कु मरु स द्रा वो जि वि चा ॥ पु से ल तो चै त न्या चा ॥ कानी

२३

आयिका ॥१७॥ संजये व्यासाचियानिरोपा ॥ तोव कुपे डि त्मा तया नृपा ॥ तैसा मिहि नि वृत्तिरूपा ॥
साधै न तु ह्या ॥७१॥ तुही संत मासिया कडा ॥ दिटि चा कराल बहुडा ॥ तरि तु ह्या माने येव ठा ॥ हो
यी न मी ॥७२॥ प्रणौ नि निज धवधान ॥ मज वाळगे प सायदान ॥ दि जो जी स ना थ हो पि न ॥ ज्ञान
देवो ह्यणे ॥७३॥ इति श्री मद्भगवद्गीता सूत्र निव सुब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन
संवादे दैवासुरसंपर्दि भागयोगो नाम शोडशोऽध्यायः ॥१६॥ संपूर्णमस्तु ॥ श्रीकृष्णार्जुन
संवादे ॥ श्लोका २४ ॥ टिका ॥ १७३ ॥ ये कुणा ॥ १९७ ॥ पत्रे ॥ २४ ॥ ४५ ॥ ४५ ॥ ४५ ॥

۲۲

...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...

۲۲